15

घर जहां आत्मा वास करता है ...

घर में आनन्द

(गलातियों 5:22, 23)

इस शृंखला में हम इस बात पर चर्चा करते हैं कि यह सुनिश्चित करते हुए कि वहां आत्मा का फल पाया जाता है, घर को सफल कैसे बनाएं। पौलुस ने कहा, ''पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता, और संयम है; ऐसे-ऐसे कामों के विरोध में कोई भी व्यवस्था नहीं'' (गलातियों 5:22, 23)।

इस पाठ का फोकस आत्मा का दूसरे गुण अर्थात ''आनन्द'' है। सफल घर की परिभाषा देते हुए हमने अन्य बातों के साथ यह कहा था कि यह खुशहाल है। यह विशेषता उस आवश्यकता के साथ थी कि आनन्द से भरा घर खुशहाल है। एक छत के नीचे रहने पर किसी को दुख और नाराज़गी के अलावा और कुछ न देने वाला घर सफल नहीं है।

आनन्द कहां से मिलता है? हमें लग सकता है कि आनन्द सांसारिक समृद्धि से, धन या सम्पत्ति जमा करने से मिलता है। वास्तव में कुछ सीमा तक आर्थिक सुरक्षा और सुविधा से जीवन और सुखद हो सकता है। निर्धनता कोई खूबी नहीं है। परन्तु जिन लोगों के पास अधिक धन होता है, आमतौर पर उनके घर अधिक दुखी होते हैं, जबकि जिनके पास धन नहीं होता उनके घर बहुत खुशहाल होते हैं। इसलिए घर में आनन्द या खुशी दौलत से नहीं आते न ही सम्पत्ति का होना इसकी गारन्टी है।

आनन्द धर्मी ठहराए जाने से मिलता है। घर में खुशी हो सकती है यदि घर को बनाने वाले लोग मसीह के द्वारा उद्धार पाए हुए, या धर्मी ठहराए हुए हैं। हम उस अवधारणा को नये नियम में पाए जाने वाले आनन्द के स्वभाव पर चर्चा करके दिखाना चाहते हैं और फिर हम देखेंगे कि हमारे अपने घरों में ऐसा आनन्द होने के लिए क्या आवश्यक है।

आनन्द का स्वभाव

सच्चा आनन्द धर्मी ठहराए जाने से मिलने की बात नये नियम में शामिल ''आनन्द'' और घर में शामिल आनन्द के ध्यान से होती है।

आनन्द का महत्व

नया नियम आनन्द से भरा है! नये नियम में ''आनन्द'' के लिए शब्द *chara* है। विलियम बार्कले ने कहा है कि ''नया नियम तो आनन्द की पुस्तक है।'' उसने आगे कहा, ''नये नियम में क्रिया शब्द *chairein* है जिसका अर्थ आनन्द करना है, बहत्तर बार और *chara* जिसका अर्थ आनन्द है, साठ बार आता है।''[1]

नया नियम हर जगह इस बात का संकेत देता है कि परमेश्वर चाहता है कि हम आनन्द का अनुभव करें। यीशु का जन्म ''बड़े आनन्द का सुसमाचार'' था (लूका 2:10)। यीशु ने कहा, ''मैंने ये बातें तुम से इसलिए कहीं हैं, कि मेरा आनन्द तुम में बना रहे, और तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए'' (यूहन्ना 15:11)। जी उठने की घोषणा हो जाने के बाद चेले ''बड़े आनन्द के साथ'' (मत्ती 28:8) चले गए थे। नये नियम के लेखक अपने पाठकों को सलाम करने या अलविदा कहने के समय आमतौर पर *chara* शब्द के एक रूप का इस्तेमाल करते थे (देखें 2 कुरिन्थियों 13:11 और याकूब 1:2)।

आनन्द क्या नहीं है

नये नियम में दिखाए गए ''आनन्द'' (*chara*) का अर्थ हर समय अच्छा अहसास या उल्लास नहीं हो सकता। क्यों?

1. *फिलिप्पियों 4:4 की बात के कारण:* ''प्रभु में सदा आनन्दित रहो; मैं फिर कहता हूं, आनन्दित रहो!'' (फिलिप्पियों 3:1 और 1 थिस्सलुनीकियों 5:16 भी देखें।) इस आयत की दो बातों से संकेत मिलता है कि आनन्द केवल अच्छा अहसास ही नहीं है। एक तो यह है कि यह ''सदा'' शब्द का इस्तेमाल करता है। कोई व्यक्ति सदा अच्छा *महसूस* नहीं कर सकता। दूसरा यह है कि यह आयत वास्तव में हमें आनन्द करने की *आज्ञा* देती है। भावना या अहसास के लिए, प्रसन्नता या खुश रहने की आज्ञा नहीं दी जा सकती। हर समय प्रसन्न रहने की आज्ञा को कोई भी व्यक्ति कैसे मान सकता है?

2. *आनन्द से जुड़ी बातों के कारण।* आनन्द का सम्बन्ध धीरज और सहनशीलता से है। कुलुस्सियों 1:11, 12 में पौलुस ने कहा कि उसने कुलुस्सियों के लिए प्रार्थना की कि वे ''सब प्रकार की सामर्थ से बलवन्त होते जाएं, ... कि आनन्द के साथ हर प्रकार से धीरज और सहनशीलता दिखा सकें, और पिता का धन्यवाद करते रहें, जिसने हमें इस योग्य बनाया है कि ज्योति में पवित्र लोगों के साथ मिरास में सहभागी हों।'' आनन्द का अर्थ यह नहीं है कि कठिन परिस्थितियां नहीं होंगी, बल्कि यह तो धीरज और सहनशीलता के उन गुणों से जुड़ा है, जो ऐसी परिस्थितियों में सहन करने के लिए आवश्यक होती हैं।

इसके अलावा आनन्द पवित्र लोगों की अच्छी खबर मिलने से मिलता है। जब हम साथी मसीही लोगों के बारे में अच्छी बातें सुनते हैं तो आनन्दित होते हैं। यूहन्ना ने संकेत दिया कि वह उनके साथ होने का इच्छुक था, जिन्हें उसने, इसलिए लिखा कि उनका आनन्द ''पूरा हो'' (2 यूहन्ना 12)। 2 कुरिन्थियों 7:6, 7, 13 में पौलुस ने कहा कि वह आनन्दित हैं क्योंकि उसे कुरिन्थियों के मन फिराव और जोश का पता चला है। फिलिप्पियों को लिखते हुए उसने कहा कि वह ''प्रभु में बहुत आनन्दित'' है क्योंकि अब वे उसके काम में उसके समर्थन के लिए उसकी सहायता कर सकते थे (फिलिप्पियों 4:10; फिलेमोन 7 भी देखें)।

इसके अलावा सच्चा आनन्द अनुशासन और परीक्षा के साथ भी जुड़ा है। याकूब ने लिखा, ''हे मेरे भाइयो, जब तुम नाना प्रकार की परीक्षाओं में पड़ो, तो इसको पूरे आनन्द की बात समझो'' (याकूब 1:2)। आरम्भिक मसीही जब सताए जाते थे तो वे सताए जाने के कारण आनन्दित होते थे (प्रेरितों 5:41; 2 कुरिन्थियों 6:10; 1 पतरस 4:13 भी देखें)।

3. *पौलुस के व्यवहार के कारण।* फिलिप्पियों के नाम लिखने के समय वह जेल में था, सम्भवतया मृत्यु दण्ड पाने को था (फिलिप्पियों 1:20), तौभी फिलिप्पियों की पुस्तक आनन्द की पत्री है! इसी पुस्तक में ''सदा आनन्दित रहो'' लिखने के समय पौलुस यकीनन यह नहीं कह रहा था कि मसीही लोगों को बेपरवाह, उदासीन किस्म का आनन्द, हर समय सुख के आभास वाला आनन्द होना चाहिए।

आनन्द क्या है

आनन्द यदि केवल खुशी का अहसास या अच्छी भावना नहीं है तो फिर बाइबल का आनन्द क्या है? *नये नियम में, आनन्द का सम्बन्ध आत्मिक मूल्यों से है।*

1. *मसीह के साथ जोड़ना।* उन पण्डितों ने जब तारे को देखा जो उन्हें यीशु तक ले गया तो वे आनन्दित हुए (मत्ती 2:10)। चेलों ने जब जी उठे प्रभु को देखा तो वे आनन्दित हुए (यूहन्ना 20:20; लूका 24:52)। जक्कई ने आनन्द से यीशु का स्वागत किया (लूका 19:6)।

2. *मसीही बनना, या उद्धार पाए हुए होना।* कूश देश का मन्त्री बपतिस्मा लेने के बाद ''आनन्द करता हुआ अपने मार्ग पर चला गया'' (प्रेरितों 8:39)। थिस्सलुनीके के लोगों ने ''बड़े क्लेश में, पवित्र आत्मा के आनन्द के साथ, वचन को माना'' या मसीही बन गए (1 थिस्सलुनीकियों 1:6)।

3. *दूसरों के उद्धार की खबर सुनना।* इसके अलावा नये नियम के समयों में जब मसीही लोगों को पता चलता था कि लोगों ने उद्धार पाया है या और चेले भी विश्वासी हैं तो वे आनन्दित होते थे। खोए हुओं के उद्धार पाने पर परमेश्वर आनन्दित होता है (लूका 15)। इस बात से कि अन्यजातियों ने मन बदला है, यहूदी विश्वासी ''बहुत आनन्दित हुए'' (प्रेरितों 15:3)। पौलुस कुलुस्से के लोगों के धीरज के कारण (कुलुस्सियों 2:5) और थिस्सलुनीके के विश्वास और प्रेम के कारण (1 थिस्सलुनीकियों 3:6-9) आनन्दित था। मसीही लोगों को सच्चाई में चलते देख यूहन्ना आनन्दित हुआ (2 यूहन्ना 4)।

फिर से, हम पौलुस यानी आनन्द के व्यक्ति के बारे में सोच सकते हैं, जो फिलिप्पी की जेल में भी भजन गा पाया (प्रेरितों 16:25) और जो रोमी जेल में भी ''सदा आनन्दित रहो'' लिख सका। उसे वास्तव में किस बात ने प्रसन्न किया था? उसका अन्तिम आनन्द क्या होगा? वे लोग जो उद्धार पाने में उसके साथी हैं! फिलिप्पी के लोग उसका ''आनन्द और मुकुट'' थे (फिलिप्पयों 4:1)। थिस्सलुनीके के लोगों के लिए उसने लिखा, ''भला हमारी आशा, या आनन्द या बड़ाई का मुकुट क्या है? क्या हमारे प्रभु यीशु के सम्मुख उसके आने के समय तुम ही न होगे? हमारी बड़ाई और आनन्द तुम ही हो'' (1 थिस्सलुनीकियों 2:19, 20)। पौलुस को यह जानकर आनन्द मिला कि उसके द्वारा लोगों का उद्धार हुआ है और वे विश्वासी बने हुए हैं।

आनन्द पवित्र आत्मा के फल के रूप में

बाइबली आनन्द उद्धार पाए हुए होने से जुड़ा है, इस कारण यह उपयुक्त है कि आनन्द की बात आत्मा के फल के भाग होने के रूप में की जाए। क्यों?

1. *क्योंकि हमारा उद्धार पवित्र आत्मा के द्वारा होता है।* हमें उद्धार दिलाने में पवित्र आत्मा

का बड़ा योगदान है। हम जल और आत्मा के द्वारा नया जन्म पाते हैं (यूहन्ना 3:3, 5), और हमारा उद्धार ''नये जन्म के स्नान और पवित्र आत्मा के हमें नया बनाने के द्वारा'' होता है (तीतुस 3:5)। यह स्नान तब होता है जब हम पवित्र आत्मा की प्रेरणा से दिए गए वचन की बात को मानते हैं। पिन्तेकुस्त के दिन वाले लोगों की तरह, हम मसीह में विश्वास करके, मन फिराकर बपतिस्मा ले सकते हैं और पापों की क्षमा पा सकते हैं (प्रेरितों 2:38)।

2. *क्योंकि उद्धार पाने के समय हमें पवित्र आत्मा मिलता है।* उद्धार पाने पर हमें परमेश्वर की आज्ञा मानने के द्वारा (प्रेरितों 5:32) परमेश्वर की सन्तान होने (गलातियों 4:6) पर आत्मा दिया जाता है। यह तब होता है जब हम मन फिराकर बपस्तिस्मा लेते हैं (प्रेरितों 2:38)। मसीही व्यक्ति को उद्धार पाने या धर्मी ठहराए जाने पर ''पवित्र आत्मा का वास''[2] मिलता है।

हमारा ''उद्धार आत्मा के द्वारा'' होता है और धर्मी ठहराए जाने पर हमें ''आत्मा मिलता है,'' इस कारण केवल यही तर्कसंगत है कि आनन्द जो उद्धार का एक परिणाम है, आत्मा के फल का भाग हो। यह आनन्द जो हमारे धर्मी ठहराए जाने से मिलता है, केवल अच्छा अहसास, हंसते रहना या मुस्कुराते रहना नहीं है। इसके बजाय यह तो वह आनन्द है, जो तब भी बना रहता है, जब परिस्थितियां बिल्कुल विपरीत हों, क्योंकि तब भी हम उद्धार पाए हुए रह सकते हैं।

परिवार में आनन्द

यदि परिवार के सदस्य के रूप में हमारे जीवनों में यह आनन्द है तो हमारे घर खुशहाल ही होंगे। धर्मी ठहराए जाने से मिलने वाला आनन्द किसी भी प्रकार अच्छी भावना से गहरा है; यह सुख या सन्तुष्टि के अनुभव से भी गहरा है। बेहतरी की यह भावना विपरीत परिस्थितियों में खत्म नहीं होती। समृद्धि हमेशा नहीं रहती; दुख और निराशा के समय बेशक आएंगे। यदि हमारा आनन्द सांसारिक सम्पत्ति या सांसारिक मूल्यों पर आधारित है, तो हम पाएंगे कि ''कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं, और चोर सेंध लगाते और चुराते हैं'' (मत्ती 6:19)। सांसारिक चीज़ें टिकी नहीं रहतीं। यदि हमारा आनन्द उन पर आधारित है, तो उनके चले जाने पर हमारा घर खुशहाल नहीं रहेगा।

परन्तु यदि हमारा आनन्द आत्मिक आशिषें अर्थात उद्धार और धर्मी ठहराए जाने के अनुभव पर आधारित है तो हमारा आनन्द सदा तक बना रह सकता है। ऐसा आनन्द जीवन को धनवान बनाकर हमारे बोझों को हल्का करता है। त्रासदी के आने पर मसीही व्यक्ति कह सकता है, ''मुझे दुख है कि ऐसा हुआ। इसे सहना कठिन है; पर अन्त में इससे कोई फर्क नहीं पड़ता क्योंकि मेरे पास उद्धार अभी भी है, मैं अभी भी स्वर्ग में परमेश्वर के साथ अनन्तकाल तक रहूंगा।''

ऐसी कोई गारन्टी नहीं है कि परिवार के हर सदस्य के धर्मी ठहराए जाने के कारण उसमें कोई मुश्किल नहीं होगी। परन्तु यदि परिवार का हर सदस्य विश्वासी मसीही है, तो विवाह अधिक देर तक रहेगा और घर अधिक खुशहाल होगा, जो मसीही न होने पर नहीं होना था।

आनन्द को बढ़ाना

यह सुनिश्चित करने में सहायता करने के लिए कि हमें वह आनन्द मिलेगा जो हमारे घरों में धर्मी ठहराए जाने से मिलता है, हम क्या कर सकते हैं?

विश्वासी मसीही बन कर

उस आनन्द को पाने के लिए सबसे महत्वपूर्ण कदम विश्वासी मसीही बनना है। इस ताड़ना के दो भाग हैं: (1) मसीही बनें, और (2) विश्वासी मसीही बनें। यदि हम ने अपने आपको सही नहीं पाया है तो धर्मी ठहराए जाने के आधार पर अपने घरों में आनन्द पाने की उम्मीद नहीं कर सकते। प्रभु हमारा उद्धार चाहता है और हमें उद्धार देने की राह देखता है; हम चाहे उसकी आज्ञा मानें या न मानें और फिर उद्धार पाना हमारे ऊपर है।

विश्वासी मसीही से विवाह करके

जितना आवश्यक मसीही बनना है, लगभग उतना ही महत्वपूर्ण विश्वासी मसीही के साथ विवाह करने का निर्णय है।[3] इस बात पर ज़ोर दिए जाने की उपेक्षा की गई हो सकती है। कुछ धार्मिक गुट इसे जीवन का नियम बना देते हैं कि वे अपने विश्वास के बाहर विवाह नहीं करेंगे। मुस्लिम, यहूदी, कैथोलिक और यहां तक कि कुछ प्रोटेस्टेंट लोगों की भी यही नीति है। किसी को भी जिसका अभी विवाह नहीं हुआ है, हमें मसीही जीवन साथी चुनने के लिए प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है।

उनके लिए जो अब मसीही हैं पर अपने मसीही जीवन साथी के साथ विवाह करने के समय मसीही नहीं थे, हम परमेश्वर को धन्यवाद देते हैं। हम उन विश्वासी मसीही स्त्रियों और पुरुषों के लिए विशेष धन्यवाद देते हैं जो, गैर मसीही साथियों से विवाह करने के बावजूद प्रभु के लिए काम करते जा रहे हैं। कइयों ने अपने बच्चों का पालन-पोषण अपने साथी की किसी सहायता के बिना मसीही बनने के लिए किया है। परन्तु आंकड़ों के अनुसार, मसीही व्यक्ति के गैर मसीही से विवाह करने के परिणाम आम तौर पर प्रभु के काम को प्रभावित करते हैं। इसलिए मसीही व्यक्ति के लिए किसी और विश्वासी मसीही के साथ विवाह करना बहुत ही महत्वपूर्ण है।

2 कुरिन्थियों 6:14-16 में कुछ अभिप्राय देखे जा सकते हैं:

> अविश्वासियों के साथ असमान जुए में न जुतो, क्योंकि धार्मिकता और अधर्म का क्या मेल-जोल? या ज्योति और अन्धकार की क्या संगति? और मसीह का बलियाल के साथ क्या लगाव? या विश्वासी के साथ अविश्वासी का क्या नाता? और मूरतों के साथ परमेश्वर के मन्दिर का क्या सम्बन्ध? क्योंकि हम तो जीवते परमेश्वर के मन्दिर हैं; जैसा परमेश्वर ने कहा है कि मैं उन में बसूंगा और उन में चला-फिरा करूंगा; और मैं उन का परमेश्वर हूंगा, और वे मेरे लोग होंगे।

सम्भवतया ये आयतें किसी गैर मसीही से विवाह करने को पाप नहीं ठहरातीं, पर इससे निश्चित रूप में उसे जो गैर मसीही से विवाह करने की सोच रहा है या रही है भविष्य पर सावधानीपूर्वक विचार करना चाहिए।

दूसरों को मसीही बनने के लिए प्रोत्साहित करना

इसके अलावा यह ध्यान रखने के लिए कि परिवार का हर सदस्य मसीही बने, हमें पूरी कोशिश करनी आवश्यक है। *यह ताड़ना विशेष रूप में उन माता-पिता के लिए है, जिन्हें अपने*

बच्चों को मसीही बनने के लिए प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। माता-पिता कई बार कहते हैं, ''मैं अपने बच्चों को चर्च जाने या उन्हें बपतिस्मा लेने के लिए मजबूर नहीं करता क्योंकि मैं उनके फैसले पर अधिकार नहीं रखना चाहता।'' क्यों नहीं? हम अपने बच्चों को स्कूल में अच्छे से अच्छा परिणाम देने, खेलों या कला में बेहतरीन प्रदर्शन करने या अच्छी से अच्छी शिक्षा पाने, अच्छी नौकरी पाने और जीवन के अन्य हर क्षेत्र में बेहतर करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहते हैं। हम उन्हें मसीही बनने के लिए प्रोत्साहित करने की कोशिश क्यों न करें? क्या इससे हमारे मूल्यों और हमारी प्राथमिकताओं का पता नहीं चलता? अपने बच्चों के लिए हमारे लिए सबसे महत्वपूर्ण क्या है? सांसारिक खुशी, सांसारिक समृद्धि या यहां उद्धार के साथ अनन्तकाल के लिए स्वर्ग में। मैं अपने बच्चों को खुश और सांसारिक बातों में उनके लिए बढ़िया से बढ़िया चीज़ें देना चाहता हूं जो दूसरे न दे सकते हों, पर मैं उन्हें और उनके परिवारों को उद्धार जाए हुए और स्वर्ग में ले जाना चाहता हूं!

इसके अलावा हम अपने बच्चों पर या उनके बच्चों पर न छोड़ दें! कितना अच्छा होता है जब दादा-दादी या नाना-नानी अपने नाती-पोतों को भलाई के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं!

परिवार के लोग मसीही बनने के लिए प्रोत्साहित करने का महत्व उन पतियों या पत्नियों पर भी लागू है, जिनके साथी मसीही नहीं हैं। मसीही पत्नी को अपने गैर मसीही पति को मसीह के लिए जीतने की पूरी कोशिश करनी चाहिए (1 पतरस 3:1, 2)। इसी प्रकार मसीही पत्नी को अविश्वासी पति को मसीह के लिए जीतने कोशिश करनी चाहिए। फिर, उन पर छोड़ देना निर्णायक है! पतियों या पत्नियों ने दशकों तक मसीही न बनने से इनकार किया पर अन्ततः वे मसीह में परिवर्तित हो गए हैं।

बेशक हमें अपने प्रिय-जनों को प्रभु के लिए जीतने की कोशिश करना आवश्यक है पर अन्त में आज्ञा मानने के लिए अपना मन बनाना परिवार के हर सदस्य की अपनी जिम्मेदारी है। हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि परिवार के हर सदस्य को सुसमाचार सुनने, मसीह में विश्वास लाने, अपने पापों से मन फिराने, परमेश्वर के पुत्र के रूप में मसीह में विश्वास का अंगीकार करने, और पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लेने का अवसर मिले।

सारांश

क्या आप खुशहाल घर चाहते हैं? *घर में आनन्द धर्मी ठहराए जाने से मिलता है।* यदि परिवार के सभी लोग विश्वासी मसीही हैं तो घर में एक विशेष आनन्द, खुशी, सुरक्षा होगी जो संसार के लोगों के पास नहीं है या उन्हें इसकी समझ नहीं हो सकती!

मैं विशेषकर उन पतियों और पिताओं से बात करना चाहता हूं जो मसीही नहीं हैं, और उनके सामने यह चुनौती रखता हूं: यदि पति के रूप में आप मसीही नहीं हैं या आप अपने घराने की आत्मिक अगुवे के रूप में काम नहीं कर रहे हैं तो आपने अपनी पत्नी को वह काम सौंप दिया है जिससे आपको करना चाहिए था। आपने उसे परिवार का आत्मिक बोझ दे दिया है। क्या आपको घराने के आत्मिक मुखिया के रूप में अपनी ज़िम्मेदारी स्वीकार नहीं लेनी चाहिए? आप अपने बच्चों के लिए बढ़िया से बढ़िया चीज़ें चाहते हैं और आप जानते हैं कि उनके लिए बेहतरीन क्या है। आप जानते हैं कि उनके लिए मसीही बनना सबसे बढ़िया है! यदि आप उनके

लिए यही चाहते हैं तो आपको स्वयं भी मसीही बनने की आवश्यकता है! आप अपने बच्चों को हर अच्छी चीज़ देना चाहते हैं। आप उन्हें वह सबसे बढ़िया उपहार दे सकते हैं जो उन्हें मिल सकता है, एक मसीही पिता!

मैं उनसे भी जो पत्नियां हैं, कुछ कहना चाहता हूं। यदि आप मसीही नहीं हैं, तो आपको बनना चाहिए। इसके अलावा मसीही पत्नी के रूप में, आप अपने पति के अधीन हों। यदि आप नहीं चाहती कि आपके बच्चे आपका दिल तोड़ें, पर चाहती हैं कि वे बड़े होकर आपको धन्य कहें तो मसीही बनकर अपने बच्चों को परमेश्वर से प्रेम करना और उनकी आज्ञा मानना सिखाएं।

मेरी अन्तिम अपील उस हर व्यक्ति से है जिसका उद्धार नहीं हुआ: ''मैं मसीह की ओर से निवेदन करता हूं कि परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप कर लो'' (2 कुरिन्थियों 5:20)। आनन्द इसी में है।

टिप्पणियां

[1]विलियम बार्कले, *फ्लेश एण्ड स्पिरिट: एण्ड इग्ज़ामिनेशन ऑफ़ गलेशियंस 5:19-23* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1962), 76. [2]यह आम वाक्यांश सीधे वचन से नहीं लिया गया पर वचन के विचार पर आधारित है। रोमियों 8:11 (NASB 1977) ''उसका आत्मा जो तुम में वास करता है'' की बात करता है। [3]इसके अलावा हमें अपने बच्चों और उनके बच्चों को विश्वासी मसीही लोगों से विवाह करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।